ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

राष्ट्र के विकास में महिलाओं का योगदान

सारांश

इतिहास गवाह है कि – आदिकाल से ही राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का अमूल्य योगदान रहा है। बड़े–बड़े राष्ट्रों के उत्थान–पतन तथा युद्ध का मुख्य कारण नारी रही है। राष्ट्र के नव निर्माण, उत्थान में योग्य पुत्रों को जन्म देकर लालन–पालन कर अपने रक्त का अमृतपान कराकर राष्ट्र को सींचा है। कभी रणचण्डी बन कर राष्ट्र की रक्षा में अपने शत्रुओं का नरसंहार किया है तो कभी सशक्त एवं शक्तिशाली शासिका बन कर शासन सत्ता संचालन किया है। कभी विष कन्या बनकर दुश्मनों को विषपान कराया है तो कभी नृत्यांगना बन कर सबके सुख–चैन को छीना है।

फुलसो राजेश पटेल
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
शास. शिवनाथ विज्ञान
महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)

मुख्य शब्द : राष्ट्र का विकास, उत्थान–पतन, महिलाओं का योगदान।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल के धार्मिक ग्रंथ मनुस्मृति में उल्लेख है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते है।[1] शक्ति, विद्या, धन, स्वरूपा नारी की पूजा सदियों से होती चली आ रही है। तत्कालीन जीवन एवं जगत के हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, न्यायिक, ज्ञान–विज्ञान हो अतीत के पन्नों में भारत के ज्ञान का कोई क्षेत्र न था जहां उसकी प्रतिभा मंडित न हुई हो।[2] अनेक वेद मंत्रों के अवतरण ऋचाओं के दृष्टा के रूप विश्वतारा, गोधा, अपाला, घोषा, शची, लोपामुद्रा आदि ऋषिकाओं का सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। गार्गी अरूंधती की गिनती सर्वोच्च सप्तऋषिओं में की जाती है।[3] अनुसुईया सप्तऋषिओं का नेतृत्व करती थी। पुराणों में देवताओं तथा राक्षसों के मध्य युद्ध में देवीशक्ति रणचण्डी का रूप धारण कर दैत्यों का नरसंहार करती है। सरस्वती, दुर्गा तथा लक्ष्मी पूजा उनकी अद्भूत शक्ति को दर्शाते है।

जब पृथ्वी पर भगवत अवतरण की आवश्कता हुई तब मनु के साथ उनकी पत्नी सतरूपा के तपस्या के फलस्वरूप सतरूपा ने कौशिल्या बन कर, रामजी को गोद में खिलाया था। कृष्ण जन्म भी माता अदिति की तपस्या का परिणाम था। राजा भरत जिनके नाम पर देश का नाम भारत पड़ा था, जंगल में माता शकुन्तला ने ही पालन–पोषण किया था।[4]

महर्षि पुलोमा की पुत्री शची से इन्द्र ने उनके ज्ञान से प्रभावित होकर विवाह किया था। मनु के बाजपेय यज्ञ को उनकी पुत्री इला ने यज्ञाचार्य के रूप में अनुष्ठान को सम्पन्न कराया। महाराज जनक के दरबार में महाविदुषी गार्गी एवं महर्षि यज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ इतिहास प्रसिद्ध है। यज्ञवल्क्य को गार्गी के पांडित्य एवं वैदुष्य का लोहा मानना पड़ा। इस युग में विदधा, उद्धलिका, वीचावली, अनुसुईया, यमी, सूर्या इस काल की प्रख्यात विदुषियाँ थी।[5] तीसरी शताब्दी से 11वीं शताब्दी तक शनैः शनैः नारी की शक्ति और स्वरूप में अन्तर दृष्टिगोचर होने लगा। रामायणकाल में सती साध्वी अहिल्या को इन्द्र द्वारा छल–बल से पति एवं समाज में तिरस्कृत होना पड़ा। माता सीता को अपने सतीत्व का अग्नि परीक्षा ही नहीं अपितु मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम से परित्याग का दारूण दुःख झेलना पड़ा, महाभारत काल में द्रौपदी को चीरहरण का अपमान सहना पड़ा।[6]

मध्ययुग में महिलाओं पर सामाजिक कुप्रथाएं एवं कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, बहुविवाह, पर्दाप्रथा इत्यादि प्रचलित

थी, इस युग में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई, इसके बावजूद इस युग में रजिया सुल्तान को भारत की प्रथम महिला शासिका होने का गौरव प्राप्त है। चाँद बीबी, रानी दुर्गावती, नूरजहाँ, जीजा बाई, ताराबाई तथा मुमताज महल ने मध्यकालीन अंधकार युग में अपनी यशस्वी अमिट छाप छोड़ी है।[7]

भक्तिकाल में मीरा बाई, मुक्ता बाई, केसमा बाई, गंगुबाई भक्ति की प्रमाणिकता मानी जाती है।[8] आधुनिक युग में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए सभी प्रकार की पारिवारिक–सामाजिक अंधविश्वास, कुरीतियों को तोड़ते हुए देवी चौधरानी, साहब कौर, रानी शिरोमणि, भीमाबाई, लुनाचिदार, चेनम्मा, साम्राज्य लक्ष्मी देवी वीरतापूर्वक अंग्रेजों को टक्कर दी। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में 1857 की क्रांति में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई क्रांति का नेतृत्व कर स्वतंत्र भारत के लिए बलिदान हो गई। बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, रानी तेजबाई सुल्तान, जमानी बेगम, महारानी तपस्विनी, कुमारी मैना, नर्तकी अजीजन, मंजू शहदेवी, मेहरी, माही, कृषक महिला न जाने कितनी असंख्य महिलाओं ने क्रांति में अपने आपको होम कर मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।[9]

19वीं सदी के आरम्भ में भारतीय समाज में स्त्रियों के शोषण के विरूद्ध महिलाओं की दशा में सुधार के लिए अनेक समाज सुधारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिनमें प्रमुख थे– राजाराम मोहनराय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, वीर सांलिगम, दयानंद सरस्वती, महादेव गोविन्द रानाडे, बालगंगाधर तिलक, महात्मा ज्योतिबाफूले, मालाबारी गोपालकृष्ण आगरकर, हरि देशमुख इत्यादि। महिला सुधारकों में पण्डित रमाबाई, रामाबाई रानाडे, स्वर्ण कुमारी देवी, स्वर्णमयी, सावित्री बाई फूले, आनन्दी बाई जोशी ने अपना योगदान दिया।[10] विभिन्न आंदोलनों के अध्ययन से स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, पर्दाप्रथा, बाल–विवाह, सती प्रथा, नेहिर प्रथा का अंत किया गया, जिससे स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं ने बढ़–चढ़कर पुरूषों से कदम से कदम मिलाकर अपना योगदान दिया। मां शारदा देवी, भगिनी निवेदिता, फ्रांसिना सोराबाजी, लेडी हरनाम सिंह, माता सावित्री बाई फूले, शांता तिलक, सत्यभामा तिलक, बाया कर्वे, लेडी सदाशिव अइय्यर, डॉ. इडास्कर पूनम लुकोज, मुत्तू लक्ष्मी रेडी, श्रीमती चन्द्रशेखर अइय्यर, श्रीमती गुरूशेखर, सरला नायक, रंगम्मा धनवंती रामाराव, माधवी अइय्यर, शारदा मेहता, ऐनी बीसेंट, सरोजनी नायडू, बेगम मां भोपाल, चारूलता मुखर्जी, सरला देवी चौधरी, सरला रे, लेडी अबला बोस, हीरा बाई टाटा, जानकी बाई भट्ट, अवंतिका बाई गोखले, शांता तिलक, ऐसू बाई सावरकर समाज सुधार तथा राजनीतिक क्षेत्र में अपना यशस्वी नेतृत्व प्रदान की।[11]

आजादी की लड़ाई में समाज सुधारकों के आव्हान पर नारी जागृति एवं प्रगति का शंखनाद किया गया। परिणामतः समाज सुधार व देश की आजादी के संयुक्त लक्ष्य में स्त्री–पुरूष भेद–भाव भुलाकर कदम से कदम मिलाकर स्वाधीनता महायज्ञ की आहूति में कूद पड़े। कालांतर में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए स्वाधीनता आंदोलन में लाखों स्त्रियों ने सभी प्रकार के भेद–भाव को भुलाकर घरों से निकलकर भागीदारी ही नहीं बल्कि आंदोलन को सफल बनाने में नेतृत्व प्रदान किया। भीका जी कामा जी, ऐनीबीसेंट, सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, विजयलक्ष्मी पंडित, दुर्गाबाई देशमुख, कमला देवी चट्टोपाध्याय, अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, कैप्टन लक्ष्मी अग्रणी महिलाएँ जिनके नेतृत्व एवं निर्देशन में असंख्य उत्साही युवतियां आगे आई और इनसे प्रेरणा लेकर विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दी। इससे महिलाओं में नई चेतना का विकास हुआ तथा यही चेतना बाद में स्त्रियों की प्रगति का आधार बनी।[12]

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत महिलाओं को महत्वपूर्ण दायित्व दिया गया। श्रीमती सरोजनी नायडू, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल, राजकुमारी अमृत कौर स्वास्थ्य मंत्री, श्रीमती लक्ष्मी पंडित रूस, इंग्लैड, अमेरिका की राजदूत, संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्य, अरूणा आसफअली दिल्ली महिला मेयर के दायित्वों को निर्वहन करने का उत्तरदायित्व दिया गया। श्रीमती इंदिरा गांधी को सर्वाधिक समय तक प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।[13] महिलाओं ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, विदेश मंत्री, गृहमंत्री, रक्षामंत्री, सभापति अध्यक्ष, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, प्राथमिक अधिकारी, सहायिका, गृहणी, ग्राम पंचायत मुखिया, मजदूर, खेतखलिहान एवं अन्य क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित किया। आज के परिप्रेक्ष्य में महिला शक्ति पुरूषो के सैन्य शक्ति पर एकाधिकार के वर्चस्व को भी तोड़ा है। नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस 2019 के परेड में महिलाओं द्वारा लड़ाकू विमान का अद्भूत प्रदर्शन साक्ष्य रहा है।[14]

आज की नारी आकाश में उड़कर चाँद–तारों के पास पहुँच रही है। फिर भी दहेज की बलि चढ़ा दी जा रही है। संविधान में समान अधिकार प्राप्त है। अवसर के सभी दरवाजे खुले है। क्यों और कैसे ? ये प्रश्न महिलाओं के साथ घर, परिवार, समाज तथा राष्ट्र का है। महिलाओं को सशक्त शक्तिशाली बनना है। इसके लिए महिलाओं को स्वयं को आगे आना होगा और अपना वर्चस्व स्थापित करना होगा।

राष्ट्र को सशक्त बनाने की दिशा में महिलाओं की भूमिका आज दुनिया के सामने प्रतिविंबित है –

आज हमारे देश की महिलाएँ पूरी
दुनिया के सामने चुनौती बन रही है
और सबसे अपना लोहा मनवा रही
है।
धरती से अंतरिक्ष तक और देश से
दुनिया तक
हर कहीं वह अपने अस्तित्व के
साथ मौजूद है।
घर गृहस्थी के बाहर आज महिलाएँ
सचमुच शक्ति का प्रतीक बनकर
उभरी हैं।

वह चाहे उद्योग हो या प्रक्षेपास्त्र के अतिरिक्त पुलिस, सेना, वकालत, राजनीति, शिक्षा है या थियेटर, पेंटिग, अभिनय, साहित्य, पत्रकारिता, डिजाइनर, गायिका, नृत्यांगना, एथलिट हो या फिर जबरदस्त आंदोलनकारी।[15] सभी क्षेत्र में महिलाएँ आगे बढ़ रही है एवं राष्ट्र के विकास में योगदान दे रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मनुस्मृति 3/56, राष्ट्र गौरव, वेद विभाग, शांति कुंज, हरिद्वार, युग चेतना ट्रस्ट, उत्तराखंड पृ. 64*
2. *ऋग्वेद, 10/85, 21वीं सदी–नारी, पं. श्री राम शर्मा आचार्य वांग्मय पृ. 2.39*
3. *तैत्तरीय ब्राम्हण, राष्ट्र गौरव पृ. 66*
4. *राष्ट्र गौरव, वेद विभाग, शांति कुंज, हरिद्वार, युग चेतना ट्रस्ट, उत्तराखंड पृ. 66*
5. *वैदिक साहित्य 5/14, प्रभासभा, महिला विकास और सशक्तिकरण पृ. 2*
6. *चंद्रवती लखनपाल, स्त्रियों की स्थिति पृ.25, मनुस्मृति 5/148*
7. *महिलाएँ और स्वराज्य, आशा रानी व्होरा, प्रकाशन विभाग भारत सरकार 1999, पृ. 8 व 9*
8. *महिलाएँ और स्वराज्य, आशा रानी व्होरा, प्रकाशन विभाग भारत सरकार 1999, पृ. 9*
9. *मोजस्मिलहसन आरजू, भारतीय महिलाएँ एवं आधुनिकीकरण, पृ. 11, 12, 13*
10. *महिलाएँ और स्वराज्य, पृ. 91*
11. *आधुनिक भारत, पृ. 91*
12. *महिलाएँ और स्वराज्य, पृ. 92 से 101*
13. *राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी 20वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध शासकीय विलासा पीजी कॉलेज बिलासपुर, इतिहास विभाग, पृ. 57*
14. *गणतंत्र दिवस 2019 के अवसर पर प्रातः 10:00 बजे दूरदर्शन से सीधा प्रसारण, उद्धृत।*
15. *एक से एक शिखर महिलाएँ, संगीता अग्रवाल, हिन्दी पॉकेट बुक्स, पृ. 1*